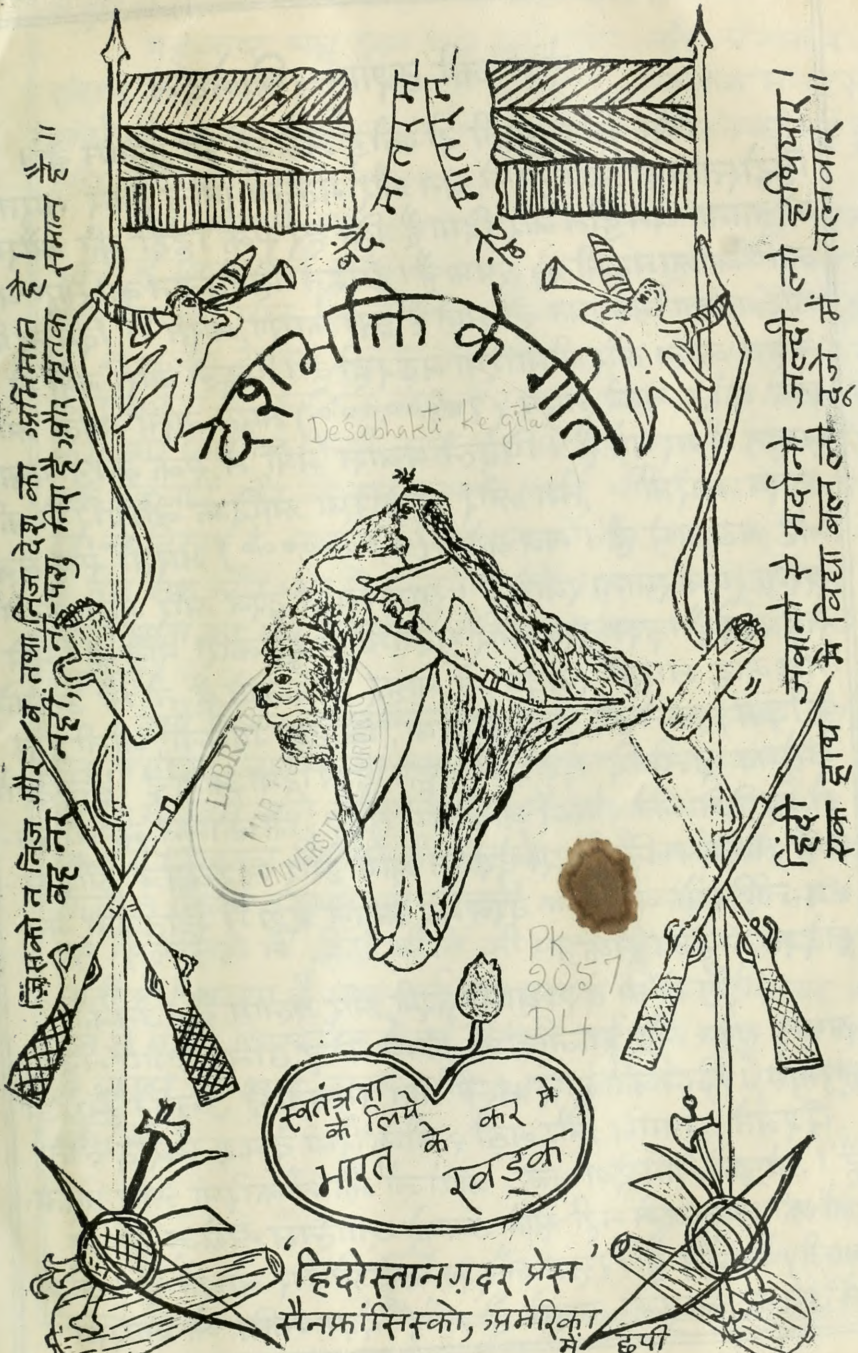
Deśabhakti ke gita


बंदे मातरम्
बंदे मातरम्
देशभक्ति के गीत
जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं, नर-पशु निरा है, और मृतक समान है॥
हिंदी जवानों मे मर्दानों जल्दी लो हथियार।
एक हाथ मे विद्या बल लो दूजे में तलवार॥
स्वतंत्रता के लिये भारत के कर में खड्ग
'हिंदोस्तान ग़दर प्रेस'
सैनफ्रांसिस्को, अमेरिका मे छपी

देश की दशा — निवेदन

तीस क्रोड़ भारती दो क्रोड़ अँग्रेज़ों के गुलाम हैं। हिंदोस्तान से अँग्रेज़ो ने धन और गल्ला खींच २ कर भारत को इतना धन-हीन कर दिया है कि हर एक हिंदी की औसत वार्षिक आमदनी २७ रुपया है। अँग्रेज़ हिंदोस्तान का सारा धन और गल्ला बिलायत ले जाते हैं इस कारण भारत में दिन पर दि[न] क़हत, काल और बीमारियां बढ़ रही हैं। पिछले बीस बर्षों में एक क्रोड़ नब्बे लाख (१,९०,००,०००) भारत वासी काल और क़हत में मर गये हैं। पिछले पचास बर्षों में एक क्रोड़ पचास लाख भारती प्लेग और मलेरिया आदिक बीमारियों की भेंट चढ़ गये हैं। नव क्रोड़ (९,००,००,०००) भारती एक वक्त रूखा सूखा खाना खाते हैं। सारा भारत दुख और गुलामी में सड़ रहा है। इस दुख और गुलामी से छुटकारा पाने के लिये जब कुछ भारती स्वदेश से बाहर निकलते हैं तो भी उनको फ़ीजी, कनेडा, आस्ट्रेलिया, ब्रिटिश गायना, चीनी डाल जमेका इत्यादि देशों में बहुत दुख दिया जाता है। इन देशों से हिंदियों को रोकने के लिये तरह २ के कानून बनाये जाते हैं ताकि न हिंदी इस देश में आयें और न स्वतंत्र और सभ्य जातियों की दशा देख कर अपने देश में स्वतन्त्रता का संदेशा पहुंचा सकें।

देश में तो देश वासी दुखी और गुलाम हैं। उनको अपने सुख और आज़ादी के लिये कोई उचित उपाय नहीं सूझता। जिनको कुछ भली बात सूझती है उनको अँग्रेज़ रिश्वतें, उपाधि और बड़ी २ नौकरियां देकर खरीद लेते हैं। जो इने गिने देश भक्त, अँग्रेज़ों की नौकरियां और खिताबों की लालच में नहीं आते उनको ज़ालिम अँग्रेज़ काले पानी भेज देते हैं। रहट और कोल्हुओं पर बांधते हैं। जेल में उन पर चाबुक मारते हैं और देश भक्ति के कारण

बहुत से सज्जनों को फांसी पर चढ़ा देते हैं।

यह कष्ट यह दुख यह दारिद्रता और अन्याय संसार के किसी भाग में नहीं है और जब तक मनहूस अंग्रेज़ी राज्य हिंदोस्तान से नहीं मिटेगा तब तक यह दुख और कष्ट प्रति दिन बढ़ता रहेगा।

बस भारत से बाहर रहने वाले भारतीयों का यह परम धर्म है कि अपने दुखिया देश से दूर रहते हुये भी अपने प्यारे देश को याद रक्खें और दुखिया देशबासियों के दुख को न भूलें। देश-भक्ति को अपने हृदय में जगह देकर स्वतंत्र देश की स्वतंत्र वायु में रहते हुये स्वतंत्र बिचार प्राप्त करें और किसी न किसी तरह वह विचार अपने देश बासियों तक पहुचावें और जो कुछ कमाये खाये पीयें उन मे से अपने देश को हिस्सा दें अर्थात हिंदोस्तान को आज़ाद करने के लिये तन मन और धन से सहायता करें। हर एक हिंदी पर भारत माता का यह कर्ज़ा है जो उसे अवश्य पूरा करना चाहिये।

इसी विचार से अमेरिका देश में एक अखबार 'हिंदोस्तान ग़दर' जारी किया गया है। इसका अभिप्राय यह है कि विदेश में रहने वाले तमाम हिंदियों में देश भक्ति का प्रचार किया जावे। स्वतंत्र बिचारों की पुस्तकें छापी जावें और फिर किसी न किसी तरह से यह पुस्तकें भारत में पहुंचाई जावें। इस सिलसिले में हिंदी गीतों की यह पहिली किताब छापी जाती है। आशा है सब भाई इस पुस्तक को उसी विचार और प्रेम से पढ़ेंगे जिस प्रेम से यह लिखी गई है। और इस पवित्र काम में तन, मन और धन तीनों से सहायता करेंगे॥

राम चन्द्र
युगान्तर आश्रम
सैनफ्रांसिस्को
अमेरिका

मई १९१६

॥ भारत माता ॥

वंदे मातरम्।

सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम् शस्य श्यामलाम्
मातरम्
शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित याम नीम्
फुल्ल कुसुमित द्रुम दल शोभिनीम्
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम् सुखदां वरदां मातरम्
त्रीस कोटि-कण्ठ-कलकल निनाद कराले
द्वि त्रीस कोटि भुजैर्धृत खर करवाले के बोले मा तुमि
अबले
बहुबल धारिणीम् नमामि तारिणीम् रिपुदल वारिणीम्
मातरम्
तुमि विद्या तुमि धर्म्म तुमि हृदि तुमि मर्म्म
त्वं हि प्राणः शरीरे
बाहु ते तुमि मा शक्ति हृदये तुमि मां भक्ति
तोमारई प्रतिमा गड़ि मन्दिरे मंदिरे
त्वं हि दुर्गा दश प्रहरण धारिणी-कमला-कमल-दल
विहारिणी
वाणी विद्या दायनी नमामि त्वाम्
नमामि कमलां अमलां अतुलां सुजलां सुफलाम्
मातरम्
वंदे मातरम्
श्यामलां सरलां सुस्मितां भुषितां धरनीम् भरनीम्
मातरम्

स्वराज्य की ज़रूरत।

हाय! भारत वर्ष तेरी ऐ क्या हालत हो रही।
गया बिगड़ सब रूप तेरा हाय अवनति हो रही॥
ढह गया घर बार सारा लुट गई सब लक्ष्मी।
गिर गये सब गढ़ तुम्हारे यह दशा क्यों हो रही?
लुट रही हो प्यारी माता, लूटते अँगरेज़ हैं।:—
तीस कोटि सुलक्ष्मी ले जाते हैं हर साल ही
सन्तान तेरी सो रही अरु है गुलामी कर रही।
कर खुशामद, भीरु बन कर, आत्मघात करा रही
होते हैं वलिदान लाखों प्लेग और अकाल में।
इंगलैंड को परवा नहीं है नित्य फौज़ बढ़ा रही
उनको नहीं कुछ प्रेम तुझ से लूटते हैं हर तरह।
व्यापार की विज्ञान की लन्दन मे बढ़ती हो रही।
'स्वराज्य' की तुझ को ज़रूरत पै वे देते हैं नही।
तेरा, ग़दर के ज़ोर से, उद्धार होगा शीघ्र ही॥

वंदे मातरम

आओ बंधु मिलो गले से कहके वंदे मातरम्।
'मातु' की सेवा करो तुम कहके वंदे मातरम्॥
हिंद के वासी सभी हैं एक की संतति अहो।
हिंद हमारी सबकी माता बोलो वंदे मातरम॥
बेंगाली हिंदू सिख मुसलमां तुम हो सभी हिंदी।
सारे मिलके सिर नवाओ कहके वंदे मातरम्
तुम्हे पिलाया दुग्ध जिसने पोषा व पालन किया।
जान दो उस मातु के हित कहके वंदे मातरम्
क़ैद हो या काला पानी या ज़मानत हो सही।
फांसी चढ़ो, कृतज्ञ मानो, बोलो वंदे मातरम्

'मेरा वतन वही है मेरा वतन वही है'

मशहूर है जो भारत दुनिया का है खुलासा,
सारे हैं जिसमें चश्मे बहते हैं जिसमें दरिया।
अलमास ओ लाल ओ गौहर होते हैं जिसमें पैदा,
यूरोप समझ रहा है सोने की जिसको चिड़िया
मेरा वतन वही है मेरा वतन वही है।

दुनिया के वहशियों को जिसने अदब सिखाया,
तहजीब का जहां को जिसने सबक पढ़ाया।
मजहब ने जिसके डाला जापान व चीं पै साया।
उठकर जहां से अब्र वहदत जहाँ पै छाया॥
मेरा वतन वही है मेरा वतन वही है।

अर्जुन ने जिस जमीं पर तीर अफ़गनी दिखाई,
की भीम ने जहां पर थी जंग आज़माई।
मोहन ने जिस चमन में कुदरत की ने बजाई।
बानों की सेज जिसमें भीषम ने थी बिछाई॥
मेरा वतन वही है मेरा वतन वही है।

उड़ता रहा जहां पर पृथ्वी का शाही परचम,
थी खूँ फिशाँ जहां पर सांगा की तेग़ये पुरखम।
प्रताप से जहाँ था शाहों का नाक मे दम,
सेवा ने जिससे पाया अलकाब शेर ए आलम॥
मेरा वतन वही है मेरा वतन वहीं है।

जिसको जहां मे अरजी जिन्नत कहा गया है,
बाद ए जिनूब जिसकी दिलकश है जां फ़िजां है
हर फूल जिस चमन का खुश रंग व खुशनुमा है,
जिसका 'फ़लक' जहां से नकशा ही कुछ जुदा है
मेरा वतन वही है मेरा वतन वही है।

मेरे प्यारे भारत

करूं दिल से क्यों न तेरा मान भारत ।
बहुत मुझ पर हैं तेरे अहसान भारत ।
यही जी मे आता है अब ध्यान भारत :-
करूं तुझ पै तन मन कुर्बान भारत ।
मेरे प्यारे भारत मेरी जान भारत ॥१॥
मै नन्हा था जब दूध हमको पिलाया ।
हुआ जब बड़ा नाज तू ने खिलाया ।
तुझी से है यह तन बदन मै ने पाया ।
रहे हर घड़ी तुझ पै सुख का बस साया ।
मेरे प्यारे भारत मेरी जान भारत ॥२॥
समां तेरे बागो का क्या है सुहाना ॥
गुलों की महक घास का लहलहाना ।
गज़ब सब्जा पत्तों का सरसराना ।
ज़माना में है तेरा मन्जर यगाना ।
मेरे प्यारे भारत मेरी जान भारत ॥३॥
हैं पक्षी अनोखे ही नग़्मे सुनाते ।
हवाओं के झोंके हैं कलियां खिलाते ।
अजब भीनी भीनी हैं खुशबूयें लाते ।
यह तेरी बनावट हैं मुझ पर जताते ।
मेरे प्यारे भारत मेरी जान भारत ॥४॥
तुझे ग़म सताये मैं खुशियां मनाऊं ।
मुसीबत सहे तू मैं मौजें उड़ाऊं ।
तू तड़पे जो हैरान मैं नान खाऊं ।
है बेहतर कि इस जीने से मर ही जाऊं ।
मेरे प्यारे भारत मेरी जान भारत ॥५॥

अगर दे प्यारा 'ग़दर' हमको हिम्मत ।
करूं शौक़ से उम्र भर तेरी खिदमत ।
बैठा दूं हर एक दिल पर तेरी अज़मत ।
दिखा दूं ज़माना को फिर तेरी शौक़त ।
मेरे प्यारे भारत मेरी जान भारत ॥६॥

भारत बंधु चेतो

खो कर देशाभिमान आज हम भ्रष्ट हुये हैं ।
इतनी ही है कसर नहीं हम नष्ट हुये हैं ॥
कहां गया वह देश-प्रेम वह मेल कहां है ।
कहां हमारा वीर्य हमारा मान कहां है ॥
जगत व्याप्त व्यापार कभी जो हम थे करते ।
खो कर उसको हाय आज हम भूखों मरते ॥
जिस भारत के वस्त्र कभी थे बाहर जाते ।
वहीं विदेशी वस्त्र आज हैं पहने जाते ॥
अब गुलाम हम बने हुये हैं सभी तरह से ॥
अंध कूप में गिर हुये हैं सभी तरह से ।
खो बल पौरुष आज हुये हैं पराधीन हम ।
निज स्वत्वों को भूल बने हैं पराधीन हम ॥
किन्तु उठो अब समय तुम्हारा फिर है आया ।
यूरोप भर में भारत का है गौरव छाया ॥
नया शक्ति संचार देश में हुआ आज है ।
मानो इसने सजा आज उत्कर्ष साज है ॥
हर्षित हो तुम उठो बंधु अब सोते क्यों हो ।
मिलो गले से ग़दर करो अब रोते क्यों हो ॥
करो नित्य यह यत्न सभी तुम तन मन धन से ।
हो भारत उद्धार बंधु अब सभी तरह से ॥

भारत माता

भारत माता भारत माता, कैसा है यह प्यारा नाता। कौन करे माता बिन ममता, जिसकी कहीं नही है समता ॥१॥ जननी जन्म भूमि होती है, सुखदा पाप ताप खोती है ॥२॥ स्वर्ग नहीं कुछ उसके आगे, भूल उसे हम बने अभागे ॥३॥ हुआ इसी से नाश हमारा, बने दरिद्री खो धन सारा ॥४॥ गुलाम होके हुये प्रवासी, दशा हुई है सत्यानाशी ॥ जननी के शरगा गत होके, अपनी भूख प्यास सब खोके ॥ जननी जन्म भूमि की सेवा, करके खाओ मीठा मेवा ॥

भारत का दुख और उसका इलाज

स्वाभिमान क्षमता गौरव सब खो बैठे हैं। कौन चीज़ है स्वत्व देश को रो बैठे हैं॥ दर दर हैं हम ठोकरें खाते फिरते। दीन दरिद्री बने दांत दिखलाते फिरते॥ देते हैं दुख बहुत हृदय के पके फफ़ोले। नहीं निकलती दाह घूमते हैं मुंह खोले ॥ हृदय जल रहा हाय इस तरह हमारा हर दम। जैसे 'वेसूवियस' न तजता तपना हर दम॥ भाई जो हैं हाय वही हैं आंख दिखाते। बने 'भेदिया' फिरते गला दबाते॥ कलह कुटिल ने हाय देश मे डेरा डाला। प्राणों की है पड़ी, पड़ा यम से है पाला॥ तिस पर भी हम नहीं समझते क्या है समुचित। करते जाते कार्य्य निरंतर अनुचित ॥ पराधीनता- रोग- ग्रस्त निज देश हुआ है। देखा जाता नहीं हाय वह वेश हुआ है॥ मौत ज़िन्दगी का ही हो गया प्रश्न उपस्थित। नहीं हो सकी चिकित्सा अब तक समुचित ॥ नन्दन बन था जहां वहां मरु भूमि बनी है। जहां सघन थे वृक्ष वहां दावाग्नि घनी है॥ जहां मालती की सुगन्ध रहती थी फैली। फूट रही है आज वहां पर फूट विषैली॥ एक एक कर निकले जाते भारत दीपक। हर दयाल, अरविंद घोष से नीति प्रसाशक॥ भारतमाता क्यों न दुखित रोवे इस दुख से। पड़े ज़ेल मे महावीर वर वीर तिलक से॥ इन सबका उपाय कहता हूं तुम से। करो ग़दर प्रचार शीघ्र अब तन मन धन से ॥॥≡

भारत माता का आशीर्वाद

अब युद्ध क्षेत्र में आओ मेरे प्यारे लाल । एक हाथ में विद्या बल हो दूजे मे तलवार ॥ मन प्रसन्न हो हृदय तुष्ट हो, तनु मृगेन्द्र सा सुदृढ़ पुस्ट हो । सदा स्वार्थ की अग्नि बुझाना देश प्रेम जल डाल

अब युद्ध क्षेत्र में आओ मेरे प्यारे लाल ॥ १॥

सदा धर्म से से दृढ़ रहना, अन्यायी की कभी न सहना । स्वदेश की रक्षा करना मेरे प्यारे लाल ॥२॥ युद्ध क्षेत्र में आओ मेरे प्यारे लाल ॥

हिंदोस्तान हमारा

सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तान हमारा । हम बुलबुले हैं इसकी यह गुलिस्तां हमारा गुरबत में हों अगर हम रहता है दिल वतन में । समझो हमे वहां ही दिल हो जहां हमारा ॥२॥ पर्वत वह सब से ऊंचा हम शाया आशमां का । वह संतरी हमारा वह पासबां हमारा ॥३॥ गोदी में खेलती हैं जिस की हज़ारों नदियाँ । गुलशन है जिनके दम से रश्के ज़िना हमारा ॥४॥ ऐ आबे रोद गंगा वह दिन है याद तुमको । उतरा तेरे किनारे जब कारवां हमारा ॥५॥

हाय भारत

विद्या से शून्य है यह भूमि अभागिन कर्मो से हीन है जाती अभिमान है विदेशी भी उपहासी करते हैं सारे इंगलैंड के बासी निवासी जापान है काले की तुम को मिली है उपाधी दरिद्रो की बढ़ती हुई अब अपार है बहशी जो थे आज वह हैं मुहज्ज़िब विद्या ही केवल फ़खर इंगिलस्तान है यूरोप के विद्वान कला कौशलों से बनाते हैं रेलादि नूतन सामान है । इधर हिंद का है निरक्षर आचार्य मुर्दे का लेता कफ़न तक का दान है क्षत्री भी हैं तो कायर हैं रण के न भुज दंड बल है न शस्त्रों का ज्ञान है पिता औ पितामह महावीर जिनके करता नहीं उनसे चूहे का कान है । चौके पर उतरी है भारत की विद्या नाड़ी तो देखो कुछ बाकी जान है । अविद्वान का सारा जीवन है निष्फल ऐसे तो जीने से मरना प्रधान है

नव जीवन

हुआ सुरन्धन युक्त देश में फिर नवजीवन का संचार।
हुआ देश मनुजों को अपनी हीन दशा का शुद्ध विचार॥
मृतक सिंह पाकर नवजीवन कार्य क्षेत्र में खड़े हुये।
करते हैं सब और प्रतिज्ञा उन्नति पथ में अड़े हुये॥
देश प्रेम मय मनुज करैंगे उन्नति हित निज जाति सुधार
होंगे सब कटिबद्ध प्रेम से करने को स्वदेश उद्धार॥
महा तुच्छ निज प्राण मोह को मन में कभी न लावें गे।
नव जीवन मार्तंड करों से आलस तिमिर हटावें गे॥
देश भक्त जन पूज्य देश की सेवा हित होगें तैयार।
सभी विमल हृदयों मे होंगे विद्या जनित स्वतंत्र विचार॥
विमल पुनीत मातृ मंदिर रज निज हृदयों में लावें गे।
कठिन देश सेवा में अपना जीवन शेष वितावें गे॥
नव जीवन का अभिनव जीवन सत्य सजीवन दाता हो।
भारतीय मनुजों के दुख मय जीवन में सुख दाता हो॥
यही मंगलिक चिरजीवन हो करे यही भारत उपकार।
फिर भारत जय दुंदुभि ध्वनि से नादित हो उन्नत संसार॥
एक मात्र आशा उन्नति की भारत का नव युवक समाज।
करे आत्म संवरण देश हित त्याग शकल निस्फल सुख साज॥

देश का भी ध्यान कर

गाफ़िल समय क्यों खो रहा, उठ देख क्या है हो रहा॥
किस नींद में तू सो रहा, कुछ देश का भी ध्यान कर॥१॥
ले सुबह से ता शाम है, विषयों में तेरा काम है॥
और हो रहा बदनाम है, कुछ देश का भी ध्यान कर॥२॥
लालच से तुझको प्यार है, और झूठ का व्यवहार है॥
दिन रात यही कार है, कुछ देश का भी ध्यान कर॥३॥
ग़दर के प्रकाश से (सुनो) होता महा तम नाश है॥

ऐसा हमें विश्वास है कुछ देश का भी ध्यान कर ॥४॥
(इसलिये)
ले गदर की अब शरण सुधरे तेरा जीवन मरन ॥
दे इसमे तन मन औ धन कुछ देश का भी ध्यान कर॥५॥

भारत तू लुट गया

गया कहां पर बता दे भारत वह पहिला जाहो जलाल तेरा ॥
कहां गई तेरी शानो शौकत किधर गया वह कमाल तेरा ॥
कहां गई तेरी देश भक्ती कहां गया ज्ञान का खज़ाना
अज़ल में पाया था जो तूंने किधर गया है वह माल तेरा ॥
कहां वह प्रतिभा कहां वह बल है कहां वह पूरी चमक दमक है।
कि जिससे मानिन्द महिरे अनवर चमक रहा था जमाल तेरा ॥
कहां गया तेरा सत्य भाषण सुकर्म एवं सुधर्म धारण।
गया कहां वह प्रेम पुर्वन कि जो था अनमोल लाल तेरा ॥
कमाल अफ़सोस! हैफ़ हसरत! कि तेरी संतान रो रही है।
नही है कोई कि उठ के देखे कि क्यों है चेहरा निढाल तेरा ॥
वकील मुख्तार बाबू पंडित रईस और चौधरी हैं जितने।
सभी के सब तुझ से बेखबर हैं न कोई पुर्साने हाल तेरा ॥
लेकिन अब लोग जगने लगे है तेरे लिये जान देने लगे हैं।
गदर की ज्योति फैला रहे हैं जिससे नाश होगा ज़वाल तेरा

एक दिन यह देश सब देशों के सिर का ताज था।
ऐक्य का परचार था और हिंदियों का राज्य था ॥
जब से इस ने भूल कर लिया फूट का मेवा जो खा।
दर बदर रुसवा ज़लीलो ख्वार बिलकुल हो रहा ॥
भाई का दुशमन जो एक भाई ही जब से बन गया।
फिर तो बरबादी का पूरा ही इरादा ठन गया ॥
यहां तक बिगड़ा कि अब हालत नज़ा में आ रहा।
जिसके ज़ारे हाल पर आलम जो आंसू बहा रहा ॥

गज़ल

उठो नींद से अब सुबह हो गई है, उठो रात सारी खतम हो गई है।
उठो सब सभा मुंतशर हो गई है, हवा सब इधर की उधर हो गई है॥
हुई सुबह और जानवर सारे जागे, जनो मर्द हैं घर व घर सारे जागे
शरारत के रसिया बसर सारे जागे, उठे वह भी जो रात भर सारी जागे
फक़त स्वप्न में बेखबर तुम पड़े हो, अज़ब नींद की नींद में तुम पड़े हो
उठो ऐ बुजुर्गों की पत खोने वालो, उठो बाप दादों की मत खोने वालो
उठो अपनी अक़्ली सुरत खोने वालो, उठो अपनी बाक़ी की गत खोने वालो
ज़रा ख़्वाब गफ़लत से आंखें तो खोलो, गई आबरू अब तो मुंह अपना धोलो
सब आरायसें लुट चुकी हैं तुम्हारी, वह चलने लगी इज़्ज़तों की सवारी
बस अब है जनाज़ा निकलने की बारी, खुलीं गफ़लतों से न आंखें तुम्हारी
गज़ब उम्र सोने में तुम ने गवां दी, उठो बन गई और क़ौमो की चांदी
वह कुन्बे की इज़्ज़त चली अब तो उठो, वह दौलत वह हशमत चली अब तो उठो
तरक़्क़ी का सारा दिन ढलने को आया, तअज्जुब ने यह दिन है तो तुमको दिखाया
किया तुम पै अदबार ने अपना साया, मगर गफ़लतों ने न तुम को जगाया
पड़े ही पड़े आंखे मल कर तो देखो, ज़रा अपनी करवट बदल कर तो देखो
उठो धूप दुनिया की ढलने लगी है, हर एक क़ौम गिर कर सँभले लगी है
बड़े बनते जाते हैं छोटे तुम्हारे, नसीबे हैं किस दर्जे खोटे तुम्हारे
अब भारत को ज़िंदा बना के दिखा दो, उसके लिये आप मर के दिखा दो

गज़ल
विनय

उठो तुम भी आप भारत के दुलारो, टुक अपने देश की हालत सुधारो
अगर कुछ देश की ममता है तुमको, तो मिल जुल कर इसे जल्दी सुधारो
बताओ कब तलक सोते रहो गे, तुम ये भारत के सच्चे नव जवानो
मिलो आपस में प्रीति पूर्वक सब, परस्पर बैर को दिल से बिसारो
विनय यही आप से माता की हर दम, भ्रात! भारत की अब हालत सुधारो

हिंदोस्तान अपना

न जानें दोस्तो ऐसा किस जगह है आशियां अपना ।
जहां ग़ैरों की महफ़िल है वहीं है बोस्तां अपना ॥
कहें क्या हम सफ़ीरों तुम से अपनी खाना बरबादी ।
कलेजा मुंह को आयेगा सुनायें गर बयां अपना ॥ १ ॥
न जा सकती थी जिस गुल तक कभी बादे खिज़ां हर्गिज़ ।
सुनो ऐ हम सफ़ीरो था गुज़र हर दम वहां अपना ॥
न मूजिद हम थे तो फिर कौन था बादे फ़साहत का ।
नहीं मालूम किसको था लक़ब शीरीं ज़ुबां अपना ॥ २ ॥
नहीं सैयाद का हम को था भूले से भी ध्यान आता ।
यही कहते थे हम हैं लुत्फ़ लुत्फ़े जाविदां अपना ॥
हमें मालूम कब था जो बिछाये जाल बैठा है ।
जोड़ेगा वही सैयाद एक दिन आशियां अपना ॥ ३ ॥
मिटाया हमको है सैयाद ने ऐसा कि जिससे अब ।
नहीं है नाम को भी रह गया बाकी निशां अपना ॥
हुये खूगर क़फ़स के ऐसे जिससे अब हमें बिलकुल ।
नहीं याद आता है, था किस चमन में आशियां अपना ॥
यह सब कुछ है मगर फिर भी यह हासिल फ़ख़्र है हमको ।
हैं हम हिंदुस्तान के और हिंदोस्तान अपना ॥

सदुपदेश

कीजे वही अनुपम मान, जिससे हो भारत कल्यान ।
मतमतान्तर त्यागो बिवाद, मिल जाव हम सब आल्हाद ।
भारत बातों दुखी महान, जिसकी यह औषधि गुणखान
नहीं छीजें देशी व्यवपार, नहिं भूलें अपने हथियार ।
मन भी तब होवे संतुष्ट, जो शरीर से होवे पुष्ट ।
छोटों पर भी रक्खो ध्यान, इन से है भारत सम्मान ।

नवोद्गार

आज लिखना है हमें उत्थान की अपने दशा ।
देश भक्ति विचार का प्रोत्साह की अनुपम दशा ॥
वीर बंग प्रदेश से कुछ जागृती है आ गई ।
'कौन हैं' पहचानने की शक्ति हम मे आ गई ॥
हो रहा संचार हम में अब कुछ उत्थान का ।
आत्म बल राष्ट्रीयता का मान का अपमान का ॥
क्या रहे क्या हो रहे हैं ध्यान आता जब कभी ।
सोच कर स्वदेश हालत हा! सहा जाता नही ॥
विश्व मे है जाति कोई भी नही ऐसी कहीं ।
एक तुल्य रहे सदा बदले दशा जिसकी नहीं ॥
ओज भारत वर्ष का अब भी सभी को ज्ञात है ।
और भारत बंशजो की ख्याति भी विख्यात है ॥
एकस्वर से कह रहे हैं 'देश का उद्धार हो' ।
'देश-हित पर शान्ति से अर्पण हमारा प्राण हो' ॥
विश्व मे प्रख्यात हो भारत हमारी भारती ।
आकर उतारें एक्य देवी भारती की आरती ॥
बंधु! अतिशय हो चुका अब तो रहा जाता नही ।
कठिन दुख का भार अब तो हा सहा जाता नही ॥
'अब ग़दर कर दो' हमारा बस इसी मे मान है ।
आप के सन्मुख यही राष्ट्रीयता का गान है ॥
देश भारत वर्ष पर अब ध्यान होगा शीघ्रही ।
बंधुवर आशा हमे हैं आप से पूरी यही ॥
मर्म्म भेदी यह हमारा सज्जनो से गान है ।
बस केवल आप ही पर देश का उत्थान है ॥
शुभ्र वदने! सर्व सुखदे!! मातृ भूमे!!! भारते ।
हम 'नवोद्गार' पर हैं जयति जय उच्चारते ॥

उन्नति का मार्ग

निरुवर ! केवल बचन से कथन जितना सुगम है।
उतना नहीं उससे अधिक करके दिखाना अगम है॥
बचन पटु व्यवहार पटु जन सभ्य हैं सर्वत्र ही।
'मन वच कर्म से एक' हैं ऐसे मनुष्य कहीं कहीं॥
जब स्वयं हम युद्ध करके क्षेत्र में दिखलायँ गे।
मूक भी रहते हुये सबको वहीं ले जायँ गे॥
एक का भी मंद रहना देश के प्रतिकूल है।
'व्यक्ति गत उन्नति सदा समुदाय उन्नति मूल है'॥
पुरुष कहलाये हुये पुर्षार्थ तज रोना बुरा।
तथा 'सृष्टि शिरोमणी' बन कर पतित होना बुरा॥
निज समुन्नति मे जगत हित सुख तथा स्वतंत्र है।
स्वार्थ और परमार्थ साधन का यही एक मंत्र है॥

स्वागत

जगहु सकल भारत के वीरो त्यागहु आलस जाल
नयन करो प्राची दिशि ओरहु भयो उदय रबि लाल
ध्यावहु शक्ति करो कर्तव्य हि धारहु धर्म विशाल
उठहु जाव मेटहु दुखियन दुख सज कृपाण कर ढाल
सोने का अब समय नहीं है बेग बढ़ावहु चाल
जासों नहिं रूठे नव सजनी चली न जाय विहाल
दुरें सकल रिपु जय जय होवे फूलें सुखद रसाल
शान्ति विराजें सारे जग में हर्षित हों महिपाल

स्वराज्य

हिलेगा न हिमालय चाहे जैसी हवा चले।
मणि-मय दिये की न ज्योति बुझ जावे गी ॥१॥
टरेंगे न यह वाक्य :- 'भोगें गे स्वराज्य हम'।
सम्पति यहां की यहीं पीछे लौट आवे गी ॥२॥

स्वराज्य

है सात बजने का समय अँधेर का साम्राज्य है।
आँधी प्रबल भी उठ रही लोगो सुकाज न आज है॥
हा! मेघ मालाये दुखित हों अश्रु बिंदु गिरा रहीं।
इस दीन भारत वर्ष पर संताप निज प्रगटा रहीं॥
जल बिंदु से ही गिर रही घन घोर मूसल धार है।
रो रहे सब भार्त बासी जानता संसार है॥
होता न व्यर्थ प्रलाप कुछ कार्य सिद्धि प्रत्यक्ष है।
जो गर्जता नहीं, बर्सता अति युक्ते युक्त समक्ष है॥
चिर काल के पश्चाद यह सौभाग्य देखा जायगा।
'जब ग़दर प्रचार हो स्वराज्य देखा जायगा'॥

हिंदोस्तान वालो

हालत सँभालो अपनी हिंदोस्तान वालो।
कांटे में खिंच रहे हो ऐ गुलिस्तान वालो॥
जग में क़दम क़दम पर बे इज्ज़ती तुम्हारी।
होती है आज देखो सन्मान मान वालो॥
बिलकुल जले हुये हो रस्सी से, सिर्फ़ ऐठन-।
बाक़ी है, और है क्या? ऐ शेखो शान वालो॥
सोये हो हाय! ऐसे कुछ भी ख़बर नहीं है।
मुर्दा नहीं हो, चौंको, उठ बैठो, जान वालो॥
दुनिया का रंग देखो वहमो गुमान छोड़ो।
लग जाओ ग़दर में हां वहमो गुमान वालो॥
व्यापार का कनक मृग फिरता तुम्हारे आगे।
जाने न पाये सँभलो तीरो कमान वालो॥
ऐसा समय क्या फिर फिर फिर तुम्हे मिलेगा।
दिल में विचार देखो ऐ हिंदोस्तान वालो॥

हम हिंदोस्तानी हैं

मुसल्मां हैं कि हिंदू सिख हैं या किरानी हैं।
यहां के जितने भिवासी हैं सब हिंदोस्तानी हैं ॥
कभी तो प्रेग हैज़ा है कभी ताऊन बेवक्त है।
हमारे वास्ते लाखों बलायें नागे हानी हैं ॥
हमारे आंसुओं को देख कर छाये हुये बादल।
हया से शरम से गैरत से दिल में पानी पानी है ॥
है क़ायल मैक्स मूलर सफ़र की तारीफ़ जब लिखी।
हमी हर चीज के मुज्जिद हमी हर शय के बानी हैं
कभी अच्छे से अच्छे, हिंदियों के पांव पड़ते थे।
दिखाये शान क्या अब हम सभी दुश्मने जानी हैं ॥
इधर हमको शिकायत भर पेट रोटी न मिलने की।
उधर इंगलैंड वाले ऐश जाद वानी हैं ॥
कोई नामो निशां पूछे तो गदरी उससे कह देना।
वतन हिंदोस्तां अपना है हम हिंदोस्तानी हैं ॥

निर्भीक नाद

जन्म लेकर मनुज कुल में 'भीरु' हम कहलायें गे ?
मान ऊपर क्यों नहीं हम मोद से मर जायें गे ?
धर चुके हैं राह क्यों मन बीच मे ठहरायें गे।
विघ्न बाधा से कहो क्यों फिर भला घबड़ायें गे ?
स्वत्व सच्चा जो भला है क्यों न उसको पायें गे ?
भीख लेने के लिये क्यों शीश नीचे लाय गे ?
जो पड़ा है सो रहा उसको भी हम जगवायें गे।
अभय वाणी से उसे निर्भीकता सिखलायें गे।
विघ्न बाधा से उसे हम चेतना बतलायें गे।
वीरता का, शीश पर उसके मुकुट झलकायें गे ॥

जय स्वतंत्रे

जननि! हरहु भारत अज्ञान। तुमहिं अकुत जन 'निमर्याद' हा हा! लिय अब मान॥ अरु अबोध ते जे सबु त्यागत वृथा अपने प्रान। नीति नियम बिपरीत काज कों समुझत वे कल्यान स्वदेश की सेवा कों मानत अधम, अधर्म महान। अपने देश व कहत निरादर करि मद मदिरापान॥ अम्बे! निज सन्तान मात्र हित कीजे बुद्धि प्रदान॥ अपनि प्रभा ते हिंद देश मधि तानहु स्वत्व बितान॥ काम क्रोध मद मत्सर असुर मारो तीक्ष्ण बान। पासद्रोस हिं करहु अमर-सद गुन-गन प्रिय-उद्यान॥

भारत माता को धैर्य्य देना

बहे नयनों से नीर सुन करके दुखड़ा तुम्हारा॥ तुम क्यों अधीर होती हो, क्यों बार बार रोती हो। क्यों आंसुओं से मुख धोती हो, क्यों तर करती हो चीर॥ सुन०॥ ये हैं कितनी आहें तुम्हारी, नहीं जाती हैं हमसे सहारी। बस देकरके हालत तुम्हारी, ज़िगर में खटके तीर॥ सुन करके०। बे शक हमने अन्याय किया, नाश है मुल्क अपने का लिया, देखें तो कांपे हिया, कलेजे उठती पीर॥ सुन०॥ अब यही है कोशिश हमारी, ग़दर आश्रम हों दर दर जारी, कुछ खुल गये कुछ खुलने की तयारी, बँधा लो अब तो धीर॥ सुन करके दुखड़ा तुम्हारा बहे नयनों से नीर॥

(भारत माता अपने मुख से कहती है:)

अब मै कौन हूँ

जो खिज़ा हुई वो बहार हूं। जो उतर गया वह खुमार हूँ॥
जो उजड़ गया वो नसीब हूं। जो बिगड़ गया वह सिंगार हूं

ा हाल क़ाबिले दीद है। कि न आशा है न उम्मीद है ॥
गिला गुज़ारे खिज़ां हूँ मैं। न सिपास संजे बहार हूँ ॥
ोई जिंदगी है यह ज़िंदगी। न हँसी रही न ख़ुशी रही।
री घुट के हसरतें मर गई। मैं उनका अब तो मज़ार हूँ ॥
ह हंसी के दिन वो ख़ुशी के दिन। गये हस्त याद सी रह गई।
भी जामे बादये नाज़ था। मगर अब मैं उसका उतार हूँ ॥

उतेजना! उठो लड़ो

न जाती हैं सभी संगठित जाति जगत में अपने आप
ानधान, आलस में बैठे क्यों भारत जननी के पूत?
ह देखते हो क्या कोई मदद गार हो दैविक दूत?
ो, कवच धारण कर बैठो! युद्ध करो वर, त्यागो स्वाप
न जाती हैं सभी संगठित जाति जगत मे अपने आप ॥१॥
ो यह क्या लाभ तुम्हारी शिक्षा अरु सम्पति अपार,
ालो नाम मात्र की पदवी, तथा तुच्छ छोटे व्यापार?
बल सत्य स्वराज्य सोम सन्मुख, हैं ये सब क्षुद्र कलाप
न जाती हैं सभी संगठित जाति जगत में अपने आप ॥२॥
रत वीरो! उठो, जुटो डटि युद्ध क्षेत्र में सब भुज ठोंक
ज उन्नति पथ मध्य किसी को मत करने दो कोई रोक
ह देखो! प्रभात सूचक है प्राची दिशि रवि दीप्ति प्रताप।
न जाती हैं सभी संगठित जाति जगत में अपने आप ॥

भारत में क़हत और उसका इलाज

नेये साहब ज़रा देश में अपने आग लगी। क़हत रूपी अग्नि के शोले
ते हैं हर आन। जिसमें लाखों भाई हमारे होते हैं बेजान ॥ सुनिये०
व २ इस आग के शोले जागे देश तमाम। ना जागे पर भारतबासी
रहे बद अन्जाम ॥ सु० ॥ कौड़ी कौड़ी पैसा पैसा जमा करो
ान। जहां तलक हो सके आपसे करो ग़दर प्रचार ॥ सुनिये० ॥

भारत! तुझे याद हो कि न याद हो।

कभी तेरा भारत नाम था, तुझे याद हो कि न याद हो
कर्त्तव्य पालन काम था, तुझे याद हो कि न याद हो
तेरा बढ़ा विज्ञान था तू विश्व बीच प्रधान था।
निर्दोष नीति-निष्काम था, तुझे याद हो कि न याद हो
छल-झूठ हिंसा हीन था सब भांति प्रेम प्रवीण था
तू तीन लोक ललाम था तुझे याद हो कि न याद हो
न अकाल प्लेग प्रताप था नहिं लेश भर भी पाप था
तू स्वर्ग सम सुख धाम था तुझे याद हो कि न याद हो
तू आप अपने समान था विद्वान वीर सुजान था।
सब विश्व करता प्रणाम था, तुझे याद हो कि न याद हो
ऐसा न कायर क्रूर था साहस सुमति भरपूर था।
आलस्य तुझको हराम था तुझे याद हो कि न याद हो।
आचार में तू एक था पूरा विचार विवेक था।
उद्योग भी अभिराम था तुझे याद हो कि न याद हो
सिद्धान्त तेरा उच्च था शुभ लक्ष्य भी नहिं तुच्छ था।
तू अध्यक्ष था तू अध्यक्ष था तुझे याद हो कि न याद हो

देश भक्ति और स्वदेश वस्तु।

तुझे ऐ भारत निवासियो क्यों, स्वदेश भक्ती नहीं है प्यारी
ज़रा तो दिल में विचार देखो, हुई है कैसी दशा तुम्हारी
फिरंगियों ने अपना झंडा यहां पर आके जब से है गाड़ा
हुई है रुख़सत यहां से बिल्कुल तमाम सनअत व दस्तकारी
जला वतन करके इस जगह के तमाम कस्बो कमाल सारे
किया है अपना राज्य यहां पै फिरंगियों ने हम पै जारी
स्वदेश भक्ती को आपने हा! यहां तलक दिल से है गिराया
कि गोया छूने से इस अभागिन के बड़ी है होती हतक तुम्हारी

यहां की रुई कपास चमड़े को कौड़ियों में खरीद कर के।
बना रहे कौड़ियों की मोहरें निसंदेह पश्चिमी व्यापारी॥
यहां पै बल्लात शालों अतलस किकन वो कम ख्वाब और मखमल।
कभी बने थे नफ़ीस ऐसे कि पहिने थे जिनको ताज धारी॥
यहां के सन्नाः वो अहिलपेशा रहे थे खुश हाल सब हमेशा।
मगर बिचारे ग़रीबो बेकस बने हैं सब इन दिनो भिखारी॥
जुलाहे, छीपी, लोहार, मोची, बढ़ी व रंग रेज़ यहाँ के सारे।
हुये हैं बेकार हाय! ऐसे करें हैं मुश्किल से दिन गुज़ारी॥
सुई से लेकर तमाम जितनी चीज़ें ~~जरूरी~~ हैं जिंदगी की।
ख़रीदी होती हैं आज भारत में ग़ैर मुल्कों से आके सारी॥
न होवें मुफ़लिस क्यों अहिले भारत पड़े न क्यों काल यां हमेशा
करोड़ो अरबों जो सालियाना ले छीन यूरोप की सनाकारी
फिरंगियों को मार भगा कर स्वदेश वस्तु को दो तरक्की।
इसी से क़ायम रहेगी प्यारो तुम्हारी फ़ेशन व वजे दारी॥

जय स्वतंत्रे!

जय स्वतंत्रे! मातु हमारी। जय सुभग-विद्या-सर-सुरभित-सित सरोजनी प्यारी॥ जय जय शान्ति-कान्ति-प्रिय-त्रिभुवन-नधि छहरावन वारी॥
जय निरमल-अविरल-यश-अमरित, सरित-बहावन वारी॥
सुखद-सतत-सुचि-स्वाभिमान की अजय-अभय महतारी॥
पुरुषनु सांचो पुरुष बनावे जतन कियो तुम भारी॥
प्राण प्रिये! तुम बिन पशु-सम सब है है सृष्टि बिचारी॥
तुव प्रताप न करत प्रकाशित सूर चन्द्रमहि सारी॥
जग-जीवन-धारन हित बरसत घन तें सावन वारी॥
अनुपम त्रिविधि बयारि भई कुसुमन विकसावन वारी॥
मातु तुमहिं महिम हिम-महा-छबि सादर सदय सँवारी॥
आत्म-तेज-करतें बिनसाई अघ-घन माला कारी॥

लाखों हमारे भाई फ़ाकों से मर रहे है ॥
हैं जिसके पास धन वह चैन कर रहे हैं ॥
दुख दर्द की अमीरों को कुछ ख़बर नहीं है।
दौलत के नशे वाले अपना जेब भर रहे हैं ॥
हिंदुस्तानियों की अक़्ल ऐसी चर गई है।
चारा उन्ही को देंगे खेती जो चर रहे हैं ॥
अँग्रेज़ खा रहे हैं खेती हमारी सारी।
हम भूखों मर रहे हैं वह पेट भर रहे हैं ॥
है ग़रीबों-अमीरों में फ़रक़ इतना।
वह भूखों मर रहे हैं वह मौज़ उड़ा रहे हैं।
ऐ जाति के दुलारो उठो ज़रा ख़बर लो।
हिंदी तड़प तड़प के जी से गुज़र रहे हैं ॥
इस वक़्त बे बशी में दुख दर्द की घड़ी मे।
दिन रात गदर में जो इमदाद कर रहे हैं ॥
फूलें फलें पे बाग़ी वह महरबान क़ौमी।
सेवा में देश की जो दिल जान दे रहे हैं।

विनती

कब तक पियोगे प्याले भारत के रहने वालो।
अब आंखें खोल देखो हिंदुस्तान वालो ॥
ग़ैरो ने तुमको लूटा शदियों से तुम को मारा।
क्यों बेख़बर पड़े हो भारत के नवनिहालो ॥
कपड़ा रहा न तन पर खाने को कुछ नही है।
करते गदागरी हो शाहों के नाम वालो ॥
सन्तान जो तुम्हारी फिरती है मारी मारी।
करती है आहो जारी भारत के नाम वालो ॥
विदेशों में सब तुम्हारे भाई कुली हैं सारे।

दुख सह रहे हैं भारा तीर व कमान वालो ॥
आपस की फूट भाई हम पै यह रंग लाई।
तब ही तो मार खाई ऊंचे निशान वालो ॥
धर्मात्मा वही हैं करते जो देश सेवा।
विनती यही है मेरी भारी इमान वालो ॥

वंदे मातरम्

भारत हमारी माता हम बंदे हैं तुम्हारे।
मीठे तुम्हारे पानी फल खुशगवार प्यारे ॥
ठंढी हवा के झोंके वुये वतन से महके।
जिस तरफ़ जायं आखें दर्शनि को तेरे माता ॥
लहरा रहे ख़ुशी में हैं किशतज़ार सारे ॥भारत० ॥१॥
स्त्री पुरुष व बच्चे जय जय पुकारते हैं।
भक्ती की लहर में दम सेवा का मारते हैं ॥
निर्बल नही तू माता तेरी तमाम शक्ति।
है रक्षक तू हमारी जीवन सुधारते हैं ॥भारत०
है इल्म और अमल तू बच्चों का जान व दिल तू।
है स्वांस तू बदन में है बाजुओं में बल तू।
दिल मे प्रेम तू है तस्वीर चित्र तेरा।
हृदय में हैं हमारे बे सुबह बेदल तू ॥ भारत०
शक्ती में दश भुजे तू बच्चों की है रक्षिता।
बच्चों की कान है तूं मानै तमाम संसार।
तू इल्म की है देवी तू हुनर का खज़ाना।
तू मारफ़त की है दरिया तू मज़हबियों की मां॥
भारत हमारी माता हम बंदे हैं तुम्हारे।
मीठे तुम्हारे पानी फल खुशगवार प्यारे ॥

देश भाइयों की गति और उसका उपाय।

ऊंचा है सबसे हिमालय हमारा, नसीबा हो सबसे ऊंचा हमारा
मेहमान जो थे अब मेहमां हमारे, है किस्सा जहां से निराला हमा
कहीं का न रक्खा कहीं का न रक्खा, पड़ा किससे अफ़सोस पाला हमारा
ज़बर से, ख्या से, दग़ा से, जफ़ा से, गरज़ हर तरह सत निकाला हमारा
हमारे भी वह दिन फलें गें कभी तो, ग़दर का ही अबतो सहारा हमारा
शत्रू पर बिजिली अबतो गिरेगी, बहुत बढ़ गया अहो नाला हमारा
भरोसा ग़दर से, बे हाथ मूँह हैं, न बरछी हमारी न भाला हमारा
कुली कुली हाय जग कह रहा है, नहीं कोई दर्ज़ा है भारी हमारा
सुनोगे कि हम हैं बड़े जंगली, कहीं दे के देखो हवाला हमारा
बुजुर्गों की आवाज़ होगी यह कहती: - कि है नाम अच्छा निकाला ह
न ढांके की मलमल न सूरत की अतलस, न अब है वह शाला दुशाला हमारा
हिला दे जगत को यह है इस बला का, सिखों, गोरखों का रिसाला हमारा

एक फ़ान्सीसी कविता का अनुवाद

चलो तुम देश के सब जन, फ़तह का आ गया अब दिन।
यह झंडा ज़ालिमी-खूनी, चढ़ा है रू बरू अपनी।
मैदान में तुम सुनते हो यार, ज़ालिम सोल्जर की ललकार।
देखो आते हैं वे पास, करने स्त्री बच्चों का नाश।
देश चलो तुम लो हथियार, तुम करो पल्टन तैयार।
चलो चलो कर दुश्मन चूर, ख़ून से होवे खेत भरपूर।

स्वराज्य की आवश्यकता

हिंदू या मुसलमान सिख या बेंगाली सारे। भारत के सपूत हम सा ही कहायंगे॥ सभा व मज़हब जितने फैले हैं भारत में। सुधर जायंगे सभी जब 'स्वराज्य' पायेंगे॥ जिसका नही राज उस दीन का न मान होता। पाकर स्वराज्य हम भी वीर शेर कहायंगे॥१॥

अंग्रेज़ ज़ालिम हैं।

रंग में भंग डाला कीना बदरंग हमको।
लग गया जंग क्यों हमारी तलवार को॥
दुख में जान पड़ी जीना भार हो गया।
तोड़ नही सकते गुलामी वाली तार को॥
उड़ जाय गे दुख और दुख के कड़ाके आज।
जो तुम मार भगाओ फिरंगी बदकार को॥
खिले हमारा प्यारा भारत सदाही बसंत वाला।
शीघ्र बल धार वीरो करो सिंह नाद को॥

× × × × × × × × × × × ×

ढाहें मशजिदें कहीं मंदिर गिराते हैं।
करते सैतानियां हटाओ बदकार को॥
ज़ालिम फिरंगियों को मार भगाओ।
हनुमान वाली, वीरो! मारो ललकार को॥
फौज़ हम बनायें गे और लड़ें गे मैदान जंग।
करेंगे आज़ाद हिंद मार 'खैरख्वार' को॥

× × × × × × × × × × × × × × × × × ×

उठह उठह तुम भारत वासी क्या तुमको कुछ लाज़ नहीं?
दुख उठावे मातु तुम्हारी क्या तुम को कुछ ध्यान नहीं?
आओ आओ जल्द मिलो अब मार भगाओ शत्रू को।
अब तुम लो तलवार हाथ में क्या तुम हो बलवान नहीं?
भारत माता तुम्हे बुलाती तुम लुक लुक क्यों जाते हो?
मातु-दूध का क्या यह बदला क्या अर्जुन का खून नहीं?
तड़प रहे हैं भारत वासी क्या तुम को कुछ ध्यान नहीं?
है तुम्हारे हाथ नहीं या रखते तुम हो बुद्धि नहीं?
मरना सबको एक दिना है आज मरो या कल।
फिर क्यों न चढ़ो बलिदान मातु हित क्या तुम को उत्साह-
- नहीं?

मातृ भूमि

जननी जन्म भूमि दोनों को सभ्य समान बताते हैं ।
उससे पाते जन्म और इससे आनन्द उठाते हैं ॥
प्यारी माता की सुअंक में करते हैं शिशु खेल ।
इसकी स्वर्ण मयी मिट्टी का है सौन्दर्य्य अमेल ॥
जो सन्तान नहीं माता की सेवा समुचित करता है ।
जो निज मातृ भूमि के नाते नहीं प्राण प्रण धरता है ॥
वह बस इस अपार सागर में है मृत देह समान ।
जिसको देश-भक्ति गौरव का नेक नहीं अभिमान ॥
सींच सींच कर दुग्ध सुधा से जिसने हमें तय्यार किया ।
जिसने शीतल वायु स्वच्छ जल शुभ आकाश बना दिया
उसकी यह नश्वर काया उस पर ही बलिदान ।
होंगे तीस कोटि माता के हम भारत सन्तान
भारत के अधिकार ओज का परिचय पूर्ण दिखायें गे ।
इसकी दुख मय दीन दशा का मान चित्र दिखलायें गे ॥
हा! ऐसा हो पतन हमारा होगा क्या उत्थान नहीं ।
मातृ भूमि के संकट का क्या बंधु तुमको ध्यान नहीं
तीस कोटि भारत बीरों की गगन विभेदक टेर ।
हरे! काल! अब काल चक्र को अब तो उलटें फेर ॥

सम्बोधन

करो जी सब स्वदेश अनुराग ।
सकल मित्र वर! कटि निज बांधो आलस्य देवहु त्याग ॥ जागो उठो चलो अब सिगरे युद्ध क्षेत्र रण भूमि।
निज बल तीक्ष्णता बताय पुनि लेवहु जय श्री चूम ।
छिन कों धरि विकराल रूप तुम देवहु अयश नशाय ।
देश अनीति म्लेच्छता अपको त्यागौ मित्र! सदाय ॥

प्यारे ! इतस्वारथ बयारि हा ! बहुरत धूम मचाय ।
ताके लोप भये बिन कैसे अवनति इतसों जाय ॥
कहा लाभ तुव ज्ञान दानसे भयो न भारत काम
हा ! क्यों जग सें किपो तुम चहत आपनो नाम ॥
जननी-चरन-कमल-सेवनु मंह सबविधि तुम कल्यान ।
आत्म त्याग करि देशसुजस रक्षहु करि जतन महान ॥

'उठहु आलस को त्यागो'

उठहु मीत आलस को त्यागहु, दिवस सिरानो जात ।
बसुधा बन्धु शस्त्र सों सज्जित तुम अजहूं औंघात ॥
जेहि विधि जाको लरन जहां है तहं सोइ हेरबत जात ।
मीजत नयन उघारत पलकन तुम सोचत पछितात ॥
जीवन समर न पीठ दिखावहिं सब आगे समुहात ।
पुरिखन के अभिमान मगन तुम करवट लै अँगरात ॥
मन मोदक सो मोद बढ़ावहु सेंतमेंत इतरात ॥
रिपुगण आगे धावत आवत तुम केवल बतरात ॥
पीछे निरखन को न समय अब अवसर अति नियरात ।
बढ़हु बढ़हु भारत वासी नतु लाज तुम्हारी जात ॥

देश और हम

प्रेम हो तो देश हित का प्रेम सच्चा होने दो ।
पूजन भजन औ ध्यान इसका धर्म अपना होने दो ॥
तन वो मन सर्वस्व अपना हो निछावर देश लगि ॥
मान हो सम्मान हो अरु गर्व हो निज देश लगि ॥
जीवन मरन सब हो तुम्हारा देश का जीवन मरन ।
देश-भक्त से भक्त बन कर ब्रत निबाहो आमरन ।

बुज़ दिल नहीं बनूंगा।

हाथों में हथकड़ी हों पैरों में बेड़ियां हों।
हो कैद, सा परिश्रम लाखों ही सख्तियां हों॥
भूख और प्यास की भी हो तकलीफ़ सरासर।
फ़ाकों के मारे कितना ही हो हाल अबतर॥
योद्धा कि भांति लेकिन हँसता रहूंगा हर दम।
ललकार कर रिपु को मै यह कहूंगा हरदम।
बुज़ दिल नही बनूंगा, बुज़ दिल नहीं बनूंगा॥१॥
दुष्ट ज़ालिम जो मेरे हाथों को काट डालें।
क़लम व दवात मेरे आगे से गर उठा लें॥
टांके लगा लगा कर सी दें मेरे सुमुख को।
कुछ वास्ता जीभ से, मेरे न होवे वाक् को॥
फिर दिल की बिजिली-लहरें भेजूंगा हर तरफ़ मै।
सब विरुद्ध बातों को कर दूंगा एक तरफ़ मै।
बुज़ दिल नहीं बनूगा बुज़ दिल नहीं बनूंगा॥२
सेवक वतन ही का हूं उसके लिये मरूंगा।
तन मन व धन साराही बलि चढ़ा दूंगा॥
रक्षा में उसकी जितनी आफ़तें होंगी हाज़िर।
उनको सहन करेगा आनन्द से मेरा दिल॥
चेहरा न मेरा बिलकुल निढाल हो सकेगा।
झंडा ग़दर का मुझ से भारत में तब गड़ेगा।
बुज़दिल नहीं बनूंगा बुज़दिल नहीं बनूंगा॥३
स्वदेश भक्ती को न हर्गिज़ छोड़ूंगा धमकियों से।
सम्बंध न मै अपना तोड़ूंगा धमकियों से॥
मुझ पर असर करेगी कुछ भी नहीं ज़मानत।
कुछ भी बदल सकेगी बिलकुल नहीं हरासत
टीका कलंक का मैं लूंगा नहीं कभी भी।

ऐ दोस्त तू न करना ऐसा मक्कीं कभी भी ॥
बुज़दिल नहीं बनूंगा बुज़दिल नहीं बनूंगा ॥४॥
ऊंचा है फरज़ मेरा बस देश की हिफ़ाज़त।
इसके लिये ग़दर ने दी है मुझे हीम्मत ॥
सन्मुख जो कोई आयेगा तो मैं देख लूंगा।
तलवार की चमक से उसे अंधा बना दूंगा ॥
इस जंग में न हूंगा परास्त मैं किसी से।
ऐ मर्द तुम भी कह दो हर एक आदमी से ॥
बुज़ दिल नहीं बनूंगा बुज़ दिल नहीं बनूंगा ॥

'देश-भक्त का प्रण'।

ज़िंदगी की यदि मेरी दुनिया मे यह तावीर हो
हाथ में हों हतकड़ी अरु पावँ में जंजीर हो
मौत की रक्खी हुई आगे मेरे तस्वीर हो
और गर्दन पर धरी जल्लाद ने शमशीर हो
हाँ भयानक से भयानक भी मेरा आख़ीर हो
पेट में खंजर दुधारा हो ज़िगर मे तीर हो
अलगरज़ जो कुछ भी मुमकिन हो मेरी तहक़ीर हो
ग़दर का परचार हो लेकिन मेरी तक़सीर हो
मैं कहूंगा फिर भी भारतवर्ष का सेवी हूं मैं
फिर करूंगा काम दुनिया में अगर पैदा हूं मैं

ग़दर का शुभ दिन १० मई

हिंद के इतिहास में है आज का दिन यादगार ।
ग़दर की जब लहर चलती थी वतन के आरपार ॥
जोश था हर तरफ़ पैदा थी देश भक्ती की बहार ।
था हर एक हिंदी आज़ादी का —— दिल से इच्छा का
गूंज आती थी चलो मारो फिरंगी आज तुम ।
क़ौम के झंडे को गाड़ो ले लो तख़्त व ताज़ तुम ॥
दुख भरी आवाज़ ने वायु मँडल से यह कहा :-
ग़दर का पैग़ाम ले कर हिंद भर में फैल जा ॥
हिंद के बच्चे से बूढ़े तक के कानो में सुना ।
ख़ातमा है ज़ुल्म का अब अंत दुख का हो चुका ॥
इसलिये उठो प्यारो हिंद के रण-क्षेत्र-वीर ।
जाति की अवनति मिटाओ थाम लो बस धनुष-तीर
बुरी हालत हिंद की और हिंदियों का हाल ज़ार ।
भूख से मारे हुये, हिंदी, क़हत का हो शिकार ॥
बो रहे वे घर मकां और हो रहे हैं मृत्यु, प्यार ।
देख के हालात मुलक की बँध गया आंसू का तार ।
ज़िंदगी बलिदान की ख़ातिर हमारी, शौक़ से ।
थी ठनी दिल में, रिहाई हो ग़ुलामी तौक़ से ॥
बाज़ मुल्ला दे रहे थे ग़दर के परचार का ।
थे ब्राह्मण भी बने सेवक इसी त्योहार का ॥
ग़रज़ सारों ही ने था छोड़ा काम घर बार का ।
नाक में दम कर दिया एक दम ब्रिटिश सरकार का ।
चढ़ गये फांसी पै बेशक पर ज़रा आह ! तक न की ।
हम ही हैं जिन की हि ख़ातिर, जान तक की शक न की

म ही हैं, जिनकी हि खातिर पंडे बलिदान हो गये।
ांतियां, नाना और अहमद शाह से जाने खो गये ॥
ेज़ आज़ादी का अपने खून से जे बो गये।
ेक! हम नादान खबवाले थे पीछे सो गये ॥
सा कायर अब जमाने भर में भी मिलता नहीं।
ौन है पत्थर-हृदय जिसका कि दिल हिलता नहीं ॥
ाखों प्यारे हिंद के थे हो गये वहां जान सार।
र न छोड़ा जीते दम तक बीर-मये नगन तलवार ॥
क्ष्मी बाई लड़ीं मैदान में मरदाना वार।
ंट बच्चे औरते सब हो गये परवाना वार ॥
धकती सीने में बागी के, अग्नि-मय-चिनगारियां।
ग लायें गी सुबीरों की कभी खूँ-नालियां ॥
र दिया दुनियां में हलचल पूज के स्वतंत्रता।
धर आ मारें फिरंगी, उधर घर देंवे जला ॥
श मई का दिन मुबारक था वही दिन आज का।
ब कि अमृत था शहादत का बुज़ुर्गों ने पिया ॥
स लिये लेलो प्यारो कसम अपनी जान से।
दूर कर देंगें गुलामी जल्द हिंदोस्तान से ॥

बंदे मातरम्

'HINDUSTAN GADAR'
SAN FRONCISCO
CAL.
U.S. AMERICA